आम का बाग

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

गरमी का मौसम था और आम के बाग में सुगन्धित बयार बह रही थी। इस बगीचे में पेड़ों की बहुत सारी पंक्तियां थीं; जहाँ तक नज़र जाती, वहाँ तक पेड़ ही पेड़, और हर पेड़ फलों से लदा हुआ। आम के छिलके लालिमा लिए नारंगी रंग के हो चुके थे; जो लोग जानकार थे, उनके लिए यह रंग एक सन्देश था कि, हाँ, आम का स्वाद चखने का समय आ चुका है।

वह बगीचा एक दयालु और उदार महिला का था, जिसका परिवार कई पीढ़ियों से इस बगीचे का मालिक रहा था और इसकी देखभाल करता आया था। प्रत्येक वर्ष जब आम पूरी तरह पक जाते तब वह महिला कोई एक दिन चुनकर अपना बगीचा शहर के लोगों के लिए खोल देती। हर कोई — युवा या बूढ़ा, धनवान या ग़रीब — वहाँ आने के लिए आमन्त्रित था।

बस एक ही शर्त थी कि इस दिन बगीचा केवल तीन घण्टों के लिए खुलेगा। इन तीन घण्टों में लोग जितने चाहें उतने आम तोड़कर खा सकते थे — मुफ़्त में — और वे टोकरियाँ भरकर आम अपने घर भी ले जा सकते थे। लेकिन तीन घण्टे पूरे होते ही उन्हें वहाँ से जाना होता।

सूरज की कोमल जगमग करती किरणें और पेड़ों की छाया, लुका-छिपी का खेल खेलते हुए तरह-तरह की छवियाँ बना रहे थे। आकाश स्पष्ट, निरभ्र था — एक भी काला बादल दिखाई नहीं दे रहा था। और ताज़े पके हुए फल की वह मीठी-मीठी महक हवा में घुलकर सभी को ललचा रही थी। बाग के द्वार के बाहर लोगों की पंक्ति बननी शुरू हो गई थी।

एक बड़ी मुस्कान के साथ बगीचे की मालकिन ने, बाहर इकट्ठे हुए लोगों का अभिवादन किया।

“स्वागत है!” उसने कहा। वहाँ खड़े कुछ बच्चों की ओर उसने देखा जो लोहे के फ़ाटक को अपनी उंगलियों से पकड़कर अन्दर झाँक रहे थे। “क्या तुम आम खाने के लिए तैयार हो?”

बच्चों की आँखें ख़ुशी से चमक उठीं, उन्होंने उसकी तरफ़ देखा और सहमति में अपना सिर हिलाया। “तो फिर, इन्तज़ार किस बात का। आ जाओ अन्दर।”

ऐसा कहकर उसने फ़ाटक खोला और हाथ के इशारे से सबको अन्दर बुलाया। पहले बच्चे और ठीक उनके पीछे उनके माता-पिता तथा बाकी बड़े अन्दर की ओर भागे; हर ओर वाह-वाह, प्रसन्नता की किलकारियां, खुशी की जयकारें सुनाई देने लगीं। जल्दी ही पूरे बाग में हर तरफ़ लोग ही लोग दिखाई देने लगे; फलों से लदे पेड़ों की ओर इशारा करते और सबसे रसीले लगने वाले फलों को तोड़ते। कुछ लोग पेड़ की छाया में बैठ गए, अपने-अपने मीठे पुरस्कार की फांक काटकर खाने के लिए तैयार; अमृत-सा मीठा, रसीला आम का गूदा, उसका चाशनी-सा रस उनके हाथों से टपक रहा था। ऐसा लग रहा था, मानो सभी के लिए यह सबसे अच्छा समय था; वे बहुत-बहुत प्रसन्न थे।

सभी, सिर्फ़ एक को छोड़कर। फ़ाटक पर एक व्यक्ति खड़ा था; उसका एक पैर बगीचे के अन्दर था और एक बाहर। बगीचे में जो भी हर्षोल्लास, खाना, आह्लाद हो रहा था, वह उसे देख रहा था; उसका चेहरा मुरझाया हुआ था, उसके माथे पर शिकन थी।

जब बाग की मालकिन ने इस आदमी को देखा और यह देखा कि वह कितना हैरान-परेशान और व्याकुल लग रहा है तो वह उसके पास गई।

“साहब,” उसने कहा, “क्या आप अन्दर आकर आम खाना पसन्द करेंगे? वैसे मैं स्वयं अपने आम की तारीफ़ कर रही हूँ, परन्तु ये बहुत ही स्वादिष्ट हैं।”

वह आदमी जवाब देने से पहले एक क्षण के लिए रुका; उसके माथे की लकीरें और गहरी होती जा रही थीं। “मैं जब यहाँ आया तब मेरा यही इरादा था।” उसने कहा। “मैंने सुना था कि यहाँ आम हैं और कोई भी उन्हें ले सकता है।”

“हाँ, यह सही है,” मालकिन ने कहा। वह मुस्कराई तथा उसे प्रोत्साहित करते हुए बोली, “तो, आप भीतर क्यों नहीं आते?”

“वो...ो...ो...” उस आदमी ने काँपती हुई आवाज़ में कहा।

मालकिन ने पूछा, “क्या हुआ?”

“मुझे — मुझे नहीं पता”, उस आदमी ने जवाब दिया। और तभी अचानक उसके मुँह से जैसे शब्द स्वतः ही निकलने लगे। “मुझे लगा था कि मैं सच में ये आम खाना *चाहता था।* इसलिए मैं चलकर आपके बाग तक आया था। पर अब जब मैं यहाँ आ गया हूँ और इन सभी पेड़ों को, आमों को और लोगों को देख रहा हूँ — और सभी कुछ किनता मनोहारी है — तो मैं दुविधा में पड़ गया हूँ।”

“कैसी दुविधा?” मालकिन ने पूछा।

उस आदमी ने अपने चारों ओर एक बार फिर से नज़र दौड़ाई। हरेक पेड़, हरेक आम को देखकर, प्रत्येक व्यक्ति को धरती द्वारा प्रदान करी गई उस बहुलता का रसास्वादन करते हुए देखकर, उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। “मेरा मतलब है, यह सब सच कैसे हो सकता है?” आख़िर उसने आश्चर्यचकित होकर कहा। “हम सभी आम खा सकते हैं? और वो भी इतने अच्छे आम? नहीं, नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता। इसमें कुछ तो छल छिपा है।”

“साहब, इसमें कुछ भी छल-कपट नहीं है,” मालकिन ने कहा। “मुझे बहुत अच्छा लगेगा अगर आप अन्दर आकर कुछ आम खाऐंगे। बस आपको एक बात याद रखनी है कि समय सीमित है। मैं बगीचा पूरे दिन खोलकर नहीं रख सकती। तो अब आपको भीतर आ जाना चाहिए।”

वह आदमी मानो उस स्त्री की बात सुन ही नहीं रहा था। वह अपने ही विचारों और भावनाओं के भँवर में फँसता जा रहा था।

“सच कहूँ तो,” उसने कहा, “मुझे तो यह भी पता नहीं कि मुझे यहाँ होना भी चाहिए था या नहीं। मैं क्या सोचकर यहाँ आ गया? मेरे पास घर पर कितने काम पड़े हैं। और मैं यहाँ आ गया, आम खाने!”

“साहब —” मालकिन ने बीच में कुछ बोलना चाहा, परन्तु अब तो वह आदमी उसकी ओर देख भी नहीं रहा था। उसकी आँखें ज़मीन में ही गढ़ी थीं; और वह घास से बातें किए जा रहा था।

“मैं होता ही कौन हूँ यहाँ बैठकर आराम से आम खाने वाला?” उसने कहा। “मैंने इन्हें खाने योग्य काम ही क्या किया है? निःसन्देह, ये आम बेहतर, सुयोग्य लोगों के लिए हैं।”

“ये आम सबके लिए हैं!” अब मालकिन चिल्लाई। “यही तो है मुख्य बात।”

उस आदमी ने उस स्त्री की ओर देखा। “सबके लिए?” उसने विस्मय से पूछा।

“हाँ।” मालकिन ने फिर से बताया। “सबके लिए।”

उस आदमी ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला और फिर से बन्द कर लिया। एक क्षण के लिए उसकी आँखों में कुछ चमक दिखाई थी, किसी प्रकाश जैसी, जैसे उसे समझ में आ गया। परन्तु फिर वही पहले-सी निराशा। उसके मुख पर बदली-सी छा गई।

“पर आप मुझे जानती ही कहाँ हैं। निःसन्देह मैं यहाँ आए अन्य लोगों-सा नहीं हूँ। मैं किसी भी तरीक़े से इन आमों को प्राप्त करने योग्य हूँ ही नहीं...। ” वह इसी प्रकार बोलता चला गया। उसके विचारों की तथा बोलने की गति और भी अधिक व्यग्रताभरी व उत्तेजित-सी होती गई। आख़िरकार, मालकिन ने उसे रोकने की कोशिश बन्द कर दी; उसे अन्य मेहमानों की आवभगत भी तो करनी थी। वह उसको उसके हाल पर छोड़कर चली गई; वह अब भी, फ़ाटक पर खड़ा, अपने आप से बातें कर रहा था।

कुछ समय बीता और लोग अपने हाथों में आमों की बड़ी-बड़ी टोकरियाँ उठाए बगीचे से बाहर जाने लगे। उन्हें देखकर वह आदमी अपनी धुन से बाहर आया।

“ऐ — कहाँ जा रहे हो तुम?” उसने उनसे पूछा।

“तुमने सुना नहीं क्या?” उनमें से एक बोला। “बाग एक मिनट में बन्द होने वाला है। यदि तुम्हें आम चाहिए, तो जल्दी करो! जल्दी-से जाकर एक ले आओ।”

परन्तु, हाय! दुर्भाग्यवश वह आदमी जल्दी नहीं गया। बल्कि उसका मुँह और भी लटक गया। “ओह, नहीं ऽ ऽ हीं ऽ ऽ हीं ऽ ऽ हीं!” वह विलाप करने लगा। “मैंने इतनी देर तक प्रतीक्षा क्यों की? मैं इतना मूर्ख कैसे हो सकता हूँ? अब बस एक ही मिनट बचा है...”

तब उसने बाग की मालकिन को अपनी ओर आते देखा।

“मुझे खेद है, साहब,” जहाँ वह व्यक्ति खड़ा था, वहाँ आकर उसने नम्रता से कहा। “मुझे अब बाग बन्द करना है। तीन घण्टे पूरे हो चुके हैं।” वह फ़ाटक की ओर आगे बढ़ी, और बिना कुछ कहे वह आदमी एक क़दम पीछे हट गया। लोहे का फ़ाटक उसके सामने से लहराता हुआ गया; और कुण्डी लग गई। और जैसे-जैसे आकाश का रंग गहरा होता गया, वह आदमी वहीं खड़ा रहा और उससे बस कुछ ही दूरी पर थे, वे आम।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।